हमारे हरिजन नेता

विद्यानिधि

हमारे हरिजन नेता

विद्यानिधि

वाणी प्रकाशन

प्रकाशक : वाणी प्रकाशन

मूल्य : 30.00 संस्करण : 2013

गारो हिल्स का शेर

गोरा हिल्स मेघालय में है। यह भारत के पूर्वी हिस्से में पड़ता है। यहाँ गारो जाति के आदिवासी रहते हैं।

कोई सौ वर्ष पहले यहाँ का जीवन बहुत ही हीन था। लोग गरीबी में ही जन्म लेते, पलते और मर जाते। भारत की तत्कालीन ब्रिटिश सरकार इनकी ओर ध्यान ही नहीं देती थी। एक ओर गरीबी, ऊपर से अँगरेजों का दबाव। उनकी हालत दिनोंदिन पस्त होती गयी। पर उन्हें देखने वाला कोई नहीं था। उनकी ओर से आवाज उठाने वाला भी कोई नहीं था।

लेकिन गरीबी के भीतर ही भीतर सुलगती आग से आखिर में पैदा हुआ एक वीर, जो गारो हिल्स का शेर कहा जाने लगा।

गारो हिल्स के उस शेर का असली नाम संगमा आर॰ सोनाराम था। उसका जन्म 1856 में सालपारा

गाँव में हुआ था। यह जिला गोलपारा, असम में पड़ता है। पर सोनाराम का कार्य-क्षेत्र गारो हिल्स था, क्योंकि मेघालय में सबसे खराब हालक वहीं की थी। अभाव तथा अज्ञान की मार से कुचली गारो जाति के बढ़ने की कोई राह न थी, न उनकी कोई सुनने वाला ही था। चारों तरफ अंधकार था।

शुरू में सोनाराम गारो हिल्स के समीप ही गाँव के एक स्कूल में शिक्षक थे। गाँवों में ही किसी देश की असली हालत देखने को मिलती है। शहर से देश की सही स्थिति का अंदाजा नहीं लगता।

सोनाराम ने शान्तिपुर गाँव के एक देहाती स्कूल में रहते हुए वहाँ की गरीबी देखी। उनसे वह सही न गयी। वे स्कूल से बचे हुए समय में गाँवों में जाते। वहाँ के किसानों-मजदूरों से मिलते। उनसे भाईचारा का नाता जोड़ते। बातचीत में ही उनसे उनकी हालत का बखान सुनते। खुद आँखों में स्थित देखते। इस तरह गाँव के लोगों से उनका सम्बन्ध गहरा होता गया।

उनके पिता क्लैंगजी थे और माता थी चामरे आर० सैंग्मा। पिता बूढ़े हो चले थे। माता भी बूढ़ी हो चली थी। इसलिए सोनाराम ने दोनों को गाँव में

रहने की पूरी व्यवस्था कर दी। बुढ़ापे में वे दोनों सानन्द रहते। बीच-बीच में गाँव जाकर सोनाराम उनकी हालत देख आते।

पिता भी अपने उदार और बुद्धिमान बेटे पर खुश थे। उनका अनुमान था कि उनका लड़का आगे चलकर नाम करेगा।

सोनाराम गाँव के बच्चों को प्यार करते। वह बिल्कुल देहाती पहनावे में रहते थे। सोनाराम ने सोचा, क्यों न गाँव वालों का एक संगठन बनाया जाय। उनकी मजदूरी निश्चित की जाए। हर मजदूर अपनी कमाई का कुछ भाग संगठन-कोष में जमा करे। उन पैसों की देख-भाल खुद करे। जरूरत के अनुसार सब मिलकर उन्हें खर्च कर सकें।

कुछ ही दिनों में गाँव संगठित हो गया। संगठन-कोष में पैसे इकट्ठा होने लगे। सोनाराम के भाषण से प्रभावित होकर वहाँ के लोग जाग उठे। इसका प्रभाव सरकार पर पड़ा। गाँव वालों ने टैक्सों में कटौती करनी शुरू की। इससे सरकार के कान खड़े हो गया।

सरकारी खुफिया जगह-जगह वेश बदलकर तैनात हो गए। वे इस बात का पता लगाने लगे के इनमें इतनी समझ आयी कहाँ से? जो लोग कल

तक मूर्ख थे, गरीब थे, उनमें ब्रिटिश सरकार का विरोध करने की ताक कहाँ से आ गई? आज तक जो नहीं हुआ था, वह हो रहा था! सरकार मुस्तैदी से छानबीन करने लगी।

पर सोनाराम ने गाँव वालों को पहले ही सब कुछ समझा दिया था। ब्रिटिश सरकार का विरोध करना मज़ाक नहीं था। उनकी सत्ता का ओर-छोर न था। उनके विरोध करने का अर्थ था उनसे लड़ाई लड़ना। गाँव वाले पहले से ही सतर्क थे।

गाँव में कोई नया आदमी या नया चेहरा दिखाई पड़ते ही सब सावधान हो जाते। सँभलकर बातें करते। वह जो भी पूछता, उसका सोच-सोचकर जवाब देते। इसलिए सरकारी खुफिया को सच्चाई जानने में देर लगी।

पर अन्त में उसे पता लग ही गया कि विद्रोह की आग किसने सुलगाई है।

सोनाराम की स्थानीय कलक्टर के यहाँ बुलाहट हुई। वह पहले से ही इस स्थिति के लिए तैयार थे, इसलिए घबराये नहीं। स्वाभिमान से सिर उठाए वह अँगरेज अफसर के सामने जा खड़े हुए।

"क्यों सोनाराम, तुम एक सरकारी स्कूल में शिक्षक हो?" कलक्टर ने सोनाराम से पूछा।

"जी सर, मैं शान्तिपुर स्कूल में शिक्षक हूँ।" सोनाराम ने सहजता से कलक्टर को जवाब दिया।

"शिक्षक का कर्त्तव्य क्या होता है, जानते हो?" कलक्टर ने फिर प्रश्न किया।

"हाँ, मैं अच्छी तरह जानता हूँ। एक शिक्षक का काम विद्यार्थी को पढ़ाना, उसे योग्य बनाना होता है। शिक्षक उसे चरित्रवान बनाता है, संयम सिखाता है उसे बड़ा बनने की प्रेरणा देता है और उसे जीवन का सही रास्ता दिखाता है।" सोनाराम ने निर्भयता से कलक्टर को शिक्षक का कर्त्तव्य बतलाया।

कलक्टर सोनाराम के जवाब पर कुढ़ गया। उसने आँखें लाल करके कहा, "चुप करो। तुम बहुत पंडित शिक्षक बनते हो। मैं जानता हूँ। पर यह तो बताओ कि बच्चों को एक चरित्रहीन शिक्षक क्या बता सकता है? उसे कौन-सी शिक्षा दे सकता है? तुम चरित्रहीन हो। सरकार को तुम्हारे चरित्र पर संदेह है। तुम शिक्षक के काबिल नहीं हो। सरकार तुम्हारी नौकरी खत्म करती है और तुम्हें दो साल की कड़ी सजा देती है।"

सोनाराम ने बड़े धीरज से कलक्टर का फैसला सुना। कलक्टर के कह चुकने के बाद सोनाराम ने बहुत गम्भीर होकर कहा, "सर, एक प्रश्न आपसे

पूछना चाहता हूँ। आप किस प्रमाण के आधार पर मुझे चरित्रहीन कहते हैं?"

तुम जिस सरकार का नमक खाते रहे, उसी के खिलाफ गाँव के लोगों को भड़काना, उनसे विद्रोह करवाना चरित्रहीनता नहीं तो क्या है?" कलक्टर गुस्से से हाँफ रहा था।

"गाँव के लोगों से विद्रोह मैंन नहीं कराया। मैंने तो उन्हें उनकी स्थिति से परिचित कराया। उन पर हो रहे सरकारी शोषण का उन्हें बोध कराया। एक भारतीय होने के नाते यह हमारा कर्त्तव्य है। इसे मैं चरित्र की बुराई नहीं मानता।" सोनाराम ने भी कलक्टर को दो टूक जवाब दिया।

इस पर हुआ वही जो होना था। सोनाराम गिरफ्तार कर लिए गए। पड़ोस के कई गाँवों में हलचल मच गई। लोग शोक मनाने लगे। आतंक छा गया।

दो वर्ष बाद जब सोनाराम जेल काटकर लौटे, तब गाँव की हालत एकदम बदतर हो चली थी। इस बीच लोगों को काफी सताया गया था। धमकाया तथा पीटा गया था। उनकी इज्जत लूटी गयी थी।

गाँव की दशा देखकर सोनाराम रो पड़े। पर रोने से तो काम नहीं चलता। इसलिए उन्होंने अपने

का सँभाला और फिर काम में जुट गए। अब वह सरकारी नज़रों से बचकर काम करते। लोगों को गुप्त रूप से जमा कर उन्हें समझाते। योजनाएँ बनाते। उस संकट से बचने का उपाय सोचते।

गाँव वाले भीतर से जल रहे थे। उनमें विद्रोह की लपटें उठ रही थीं। सोनाराम की बातें, उनके सुझाव उन्हें अच्छे लगते। उनके बताये तरीके भी अच्छे लगे। अब उनके काम करने की गति पहले से काफी बढ़ गयी।

अब सोनाराम पूर्णतः अँगरेजों के विद्रोही बन गए। उन्होंने प्रण किया कि जिस तरह होगा वे जीवन भर आजाद देश के लिए लड़ेंगे। उनमें ज्ञान भरेंगे। उन्हें सही रास्ता बताएँगे! आज़ादी के लिए उनमें प्राण फूँकेंगे।

और वे अपने संकल्प पर दृढ़ रहे। कई बार जेल गये, पर उनका मुँह कभी मलिन न हुआ। समाज-सेवा, देश-सेवा का सुख उन्हें मिल रहा था। उनके लिए जीवन में उससे बड़ा सुख दूसरा नहीं था। वे सच्चे अर्थ में जनता के नेता थे।

उनके प्रयत्न से जो लोग राजनीति में आए थे, उन्होंने फिर सोनाराम के नाम पर गाँव में सड़क बनवायी। गाँव-गाँव में पाठशाला की व्यवस्था

की। अछूतों और दलितों को राहत पहुँचायी। गारो हिल्स की गारो जाति के विकास के लिए अथक श्रम किया। देखते-देखते गाँव की तरक्की होने लगी। गाँव के लोगों में अब तक काफी चेतना आ चुकी थी। उनमें अपनी, समाज की, देश की सही पहचान करने की शिक्त बढ़ गयी। उनके दिल से अँगरेजों की दहशत दूर हो गई। उनके अत्याचारों का खुले रूप से विरोध करते।

गारो हिल्स की जागृति को देखकर अँगरेज बौखला गये। जो जाति अीाी तक उनकी जी-हुजूरी में लगी रहती थी, वह आज अकड़कर बातें करने लगी थी। पहले कोई गोरा सिपाही पहुँच जाता तो पूरा गाँव काँप उठता था, पर अब वे लोग सिपाही से ही सवाल-जवाब करते थे। इस तरह का परिवर्तन गोरी सरकार के लिए असह्य था।

सोनाराम एक बार जेल से लौटे तो गाँव वालों ने उनका भव्य स्वागत किया। उन्होंने ग्रामीणों को सलाह दी, "हमारी जिन्दगी जेल की जिन्दगी हो गयी है। हमारा अन्त कभी भी आ सकता है। मेरी इच्छा गारो हिल्स को आजाद देखने की है। लेकिन जब तक सारा भारत आजाद नहीं होता, तब तक गारो हिल्स के आजाद होने की बात नहीं उठती।"

उन्होंने आगे कहा, "पर देश के हर भाग के लोग अपनी गुलामी से ऊब चुके हैं। वे आजादी के लिए छटपटा रहे हैं। अब वह दिन दूर नहीं दीखता, जब भारत आजाद होगा और गारो हिल्स भी आजाद हवा में साँस लेगा।"

सोनाराम की बातें सुनकर ग्रामीणों का हौसला चौगुना बढ़ गया। वे लगातार अपनी योजनाएँ बनाने लगे। अपने तरीके से आजाद होने की कोशिश करने लगे।

नित्य प्रति डायरी लिखने की सोनाराम की आदत थी। यों दुनिया के हर प्रतिभाशाली व्यक्ति ने अपनी डायरी लिखी है। उससे उनके प्रतिदिन के जीवन का खाका मिलता है। प्रगति राह पर चलने का तरीका मालूम होता हैं

1905 में सोनाराम ने डायरी में अपनी सच्ची हालत का वर्णन किया है। उससे उनकी हालत और सोच का पता लगता है। हमारे लिए वह प्रेरणा की वस्तु है। सोनाराम ने लिखा है : "मैं, सोनाराम आर० संग्मा, एक मुक्त जाति का पुत्र हूँ। गारो वीर का मैं भतीजा हूँ। मेरी माँ और बहन गरीबी में पली हैं। मेरी माँ आया का काम करती थीं। इसके साथ ही अपने बड़े परिवार के पालन

करने के लिए उन्हें खेतों में भी काम करना पड़ता था जिससे उनकी गरीबी दूर होती थी। उन्हीं की मेहनत से आज हमारी स्थिति सुधरी है। गारो जाति हमें राजा कहकर पुकारती है।"

घोर गरीबी में जन्म लेकर भी सोनाराम ने साहस और लगन से अपने को ऊँचा उठाया था।

1913 में वे अचानक बीमार पड़े। उन्हें स्वस्थ करने के लिए गारो हिल्स के लोगों ने जमीन-आसमान एक कर दिया। पर अस्पताल गोरों के थे। व्यवस्था गोरों की थी। लोगों के बहुत चाहने पर भी सोनाराम विदेशी सरकार की चपेट में आ ही गए।

कुछ ही दिनों बाद उनकी मृत्यु हो गयी।

समूचा गारों हिल्स शोक में डूब गया। उनके लिए जीवन भर लड़ने वाला नेता उनसे नाता तोड़ चुका था।

पर मरने के बाद भी सोनाराम आज तक उनके लिए पूज्य हैं। उनके आदर्श हैं। उन्हें प्ररित करते हैं।

•••

मुद्रक : बालाजी आफसैट, दिल्ली-110032